बाजार संतुलन (Market Equilibrium)

बाजार (Market) क्या हैं?

हम पढेंगे:

बाजार का अर्थ एवं विशेषताएं, बाजार के प्रकार, बाजार संतुलन, संतुलन में परिवर्तन

साधारण भाषा में:

बाजार का अर्थ स्थान से लिया जाता है, जहाँ वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप में एक साथ एकत्रित होकर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय करते हैं।

अर्थशास्त्र में

बाजार वह क्षेत्र है जहाँ किसी वस्तु के क्रेता और विक्रेता आपसी संपर्क में आकर एक निश्चित वस्तु पर वस्तु का क्रय विक्रय करते हैं।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@dhali_sir*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

www.theeconomicsgruru.com

परिभाषाएं

प्रो. बेन्हम के अनुसार, "बाजार वह क्षेत्र होता है जिसमें क्रेता और विक्रेता एक दूसरे के इतने निकट संपर्क में होते हैं कि एक भाग में प्रचलित कीमतों का प्रभाव दूसरे भाग में प्रचलित कीमतों पर पड़ता है"।

प्रो. जे के मेहता अनुसार, "बाजार एक स्थिति को बताता है जिसमें एक ऐसी वस्तु की मांग एक ऐसे स्थान पर की जाती है जहाँ उसे विक्रय के लिए प्रस्तुत किया जाता है"।

बाजार की विशेषताएँ-

1. **एक क्षेत्र:** बाजार शब्द का अर्थ उस समय क्षेत्र से होता है जिसमें क्रेता और विक्रेता फैले हुए होते हैं।
2. **क्रेताओं और विक्रेताओं की उपस्थिति**
3. **एक निश्चित वस्तु**
4. **वस्तु का एक निश्चित मूल्य**

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रतियोगिता के आधार पर बाजार का वर्गीकरण

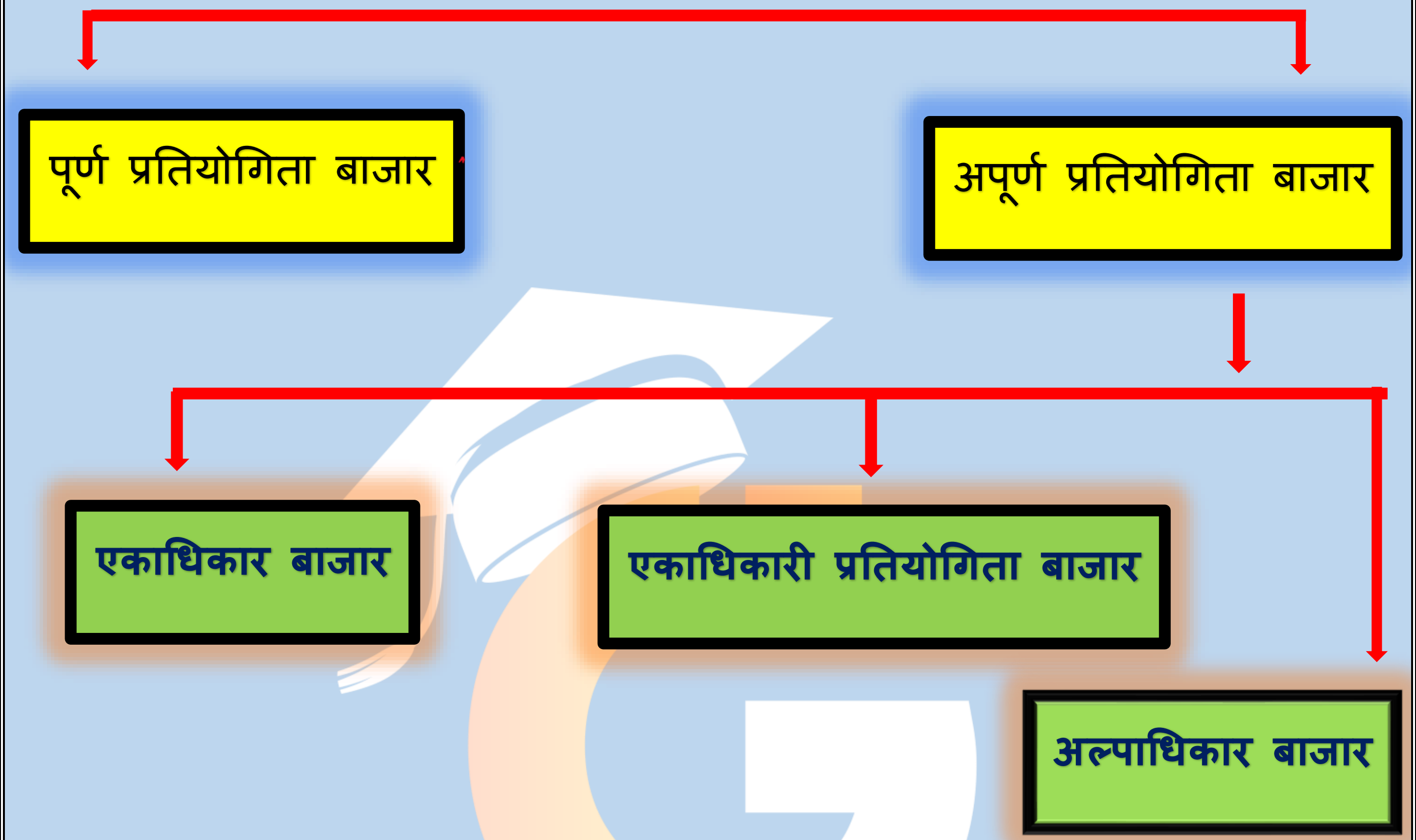

पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition Market)

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

बाजार की स्थिति जिसमें एक समान वस्तु के ***बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रेता*** होते हैं।

एक क्रेता तथा एक विक्रेता बाजार की कीमत को प्रभावित नहीं कर पाते और यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार ने ***वस्तु की एक ही कीमत*** प्रचलित रहती है।

परिभाषा

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, "पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत सी फर्म एक समान वस्तुएँ बेचती हैं। इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वहाँ बाजार की कीमत को प्रभावित कर सकें"।

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या
- वस्तु की समरूप इकाईयां
- फर्मो के प्रवेश व निष्कासन की पूर्ण स्वतंत्रता
- क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान
- उत्पत्ति के साधनों की पूर्ण गतिशीलता बनी रहती है
- कोई यातायात लागत नहीं रहती

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

एकाधिकार बाजार (Monopoly)

एकाधिकार दो शब्दों से मिलकर बना है- ***एक*** और ***अधिकार*** ।

बाजार की वह स्थिति जब बाजार ने वस्तु का *केवल एकमात्र विक्रेता* हो।

एकाधिकारी बाजार दशा में वस्तु का एक अकेला बिक्रेता होने के कारण विक्रेता का *वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण* रहता है।

प्रो. मैककोनल के अनुसार, "एकाधिकार की स्थिति उस समय होती है, जब एक अकेली फर्म एक वस्तु का एकमात्र उत्पादक होती है जिसका कोई स्थानापन्न नहीं होता"

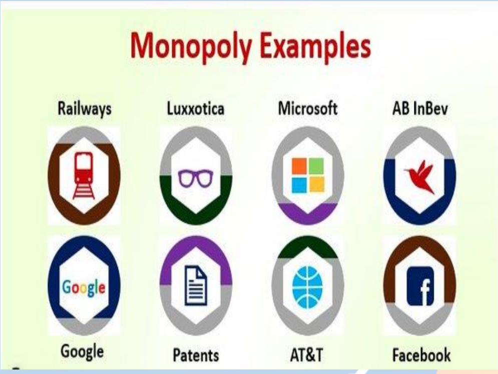

एकाधिकार की विशेषताएँ

- एक विक्रेता और अधिक क्रेता
- वस्तु के निकट स्थानापन्न का अभाव
- एकाधिकारी स्वयं कीमत निर्धारक
- नई फर्मों का प्रवेश पूर्णता प्रतिबंधित
- मांग वक्र का ऋणात्मक ढाल
- कीमत विभेद की संभावना

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

एकाधिकार उत्पन्न होने के कारण

- **कच्चे माल का केंद्रीकरण**
- **कानूनी एकाधिकार**
- **गला घोंट प्रतियोगिता**
- **पेटेंट अधिकार**

एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार (Monopolistic Competition Market)

यह बाजार ***पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार का मिश्रित रूप*** होता है। वास्तविक जगत में एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार ही प्रचलन में है।

इस बाजार दशा में समूह के उत्पादक ***विभेदीकृत वस्तुओं*** का उत्पादन करते हैं जो एक समान या समरूप नहीं होता, किंतु *निकटतम स्थानापन्न* अवश्य होता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

परिभाषाएं

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, "एकाधिकारी प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति हैं जिनमें किसी वस्तु के बहुत से विक्रेता पाए जाते हैं, किंतु प्रत्येक विक्रेता की वस्तु को उपभोक्ता के मस्तिष्क में दूसरी विक्रेताओं की वस्तु से अलग होती है"।

एकाधिकारी प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- विक्रेताओं की संख्या अधिक होना
- विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन
- आप प्रतिबंधित प्रवेश एवं बहिर्गमन
- विक्रय लागत अधिक होना
- बाजार का अपूर्ण ज्ञान
- गैर कीमत प्रतियोगिता का पाया जाना
- फर्म की कीमत नीति

THE ECONOMICS GURU

अल्पाधिकार बाजार (Oligopoly Market)

अल्पाधिकार अपूर्ण प्रतियोगिता का वह रूप है जिसमें उद्योग या समूह में केवल कुछ फर्में होती है जो एक दिए गए उत्पादन क्षेत्र में या तो समरूप वस्तुएं बनाती है या फिर उनकी वस्तुओं में ***'उत्पादन विभेदीकरण'*** पाया जाता है।

उदहारण:

दूरभाष संचार

अल्पाधिकारी बाजार की मुख्य विशेषताएं

- विक्रेताओं की कम संख्या
- कीमत एवं उत्पादन निर्धारण की नीतियों में विक्रेताओं के बीच पारस्परिक निर्भरता।
- विभिन्न फार्मों के उत्पादों के लिए ऊंची मांग की आड़ी लोच।
- विज्ञापन एवं विक्रय लागत से अधिक होना।
- प्रतिद्वंद्वियों के बीच निरंतर संघर्ष पाया जाना।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

पूर्ण प्रतियोगिता एवं एकाधिकार में अंतर

पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकार
विकेताओं की संख्या असीमित होती है।	वस्तु का केवल एक ही बिक्रेता होता है।
औसत आगम और सीमांत आगम दोनों बराबर होते हैं। **AR = MR**	औसत आगम सीमांत आगम से अधिक होता है। **AR > MR**
वस्तु की कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है।	वस्तु की कीमत सीमांत लागत से अधिक होती है।
दीर्घकाल में केवल स्थिर लागत दशा में उत्पादन संभव है।	दीर्घकाल में घटती लागत इससे लागत एवं बढ़ती लागत तीनों दशा में उत्पादन एवं संतुलन संभव है।
दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ की दशा संभव है।	दीर्घकाल में असामान्य लाभ लिया जा सकता है।
उत्पादन स्तर अधिक और कीमत कम होती है।	उत्पादन स्तर कम लेकिन कीमतें अधिक होती है।
इस बाजार में कीमत विभेदीकरण संभव नहीं है क्योंकि क्रेता को बाजार का पूरा ज्ञान होता है।	इस बाजार में कीमत विभेदीकरण संभव होता है।
फर्मों का उद्योग में प्रवेश एवं बैग मान पूर्णत: स्वतंत्र होता।	फर्मो उद्योग में प्रवेश पूर्णत: प्रतिबंधित होता है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रतियोगिता एवं एकाधिकारी प्रतियोगिता में अंतर

पूर्ण प्रतियोगिता	एकाधिकारी प्रतियोगिता
एक समान एवं समरूप वस्तुओं का उत्पादन होता है। वस्तु विभेदीकरण नहीं पाया जाता।	इस बाजार में वस्तुओं का निकट स्थानापन्न एवं मिलती जुलती वस्तुओं का उत्पादन होता है।
क्रेता विक्रेता दोनों को बाजा दशाओं का पूर्ण ज्ञान होता है।	विक्रेता दोनों को बाजार दशाओं का ज्ञान नहीं होता।
इस बाजार ने साधनों में पूर्ण गतिशीलता होती है।	इस बाजार में साधनों की गतिशीलता अपूर्ण होती है।
पूर्ण प्रतियोगिता बाजार में औसत आगम और सीमांत आगम बराबर होते हैं और X अक्ष के समानांतर पड़ी रेखा के रूप में होते हैं।	एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार में औसत आगम और सीमांत आगम अधिक लोच पूर्ण होती है तथा बाएं से दाएं नीचे गिरते हैं।
पूर्ण प्रतियोगिता में कोई विक्रय लागत नहीं होती है।	एकाधिकारी प्रतियोगिता में विक्रय लागत अधिक होती है।
पूर्ण प्रतियोगिता में वस्तुओं की कीमत सीमांत लागत के बराबर होती है।	एकाधिकारी प्रतियोगिता में वस्तुओं की कीमतें सीमांत लागत से अधिक होती है।

THE ECONOMICS GURU

एकाधिकार एवं एकाधिकारी प्रतियोगिता में अंतर

एकाधिकार	एकाधिकारी प्रतियोगिता
एकाधिकार में एक ही वस्तु होती है तथा शुद्ध एकाधिकार की दशा में वस्तु के निकट स्थानापन्न नहीं पाए जाते।	इसमें समूह की सभी फर्म में अलग अलग किंतु निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन करती है।
एकाधिकार में उद्योग और फर्म में कोई भेद नहीं होता क्योंकि उद्योग में केवल एक ही फर्म होती है।	इसमें उद्योग को समूह का नाम दिया गया है, जिसमें अनेक फर्म में होती है।
औसत आगम और सीमांत आगम दोनों नीचे गिरते हैं, किंतु औसत आगम अपेक्षाकृत कम लोचदार होता है।	औसत आगम और सीमांत आगम दोनों नीचे गिरते हैं, किंतु फर्म का मांग वक्र अर्थात औसत आगम अपेक्षाकृत अधिक लोचदार होते हैं।
एकाधिकार में नए फर्मो का उद्योग में प्रवेश पूर्णत: वर्जित होता है।	एकाधिकारी प्रतियोगिता में समूहों अर्थात उद्योग में नई फर्म में प्रवेश कर सकती है या उसे छोड़ सकती है।
एकाधिकार में केवल सूचनात्मक विज्ञापन ही किए जाते हैं प्रतियोगी विज्ञापन नहीं।	एकाधिकारी प्रतियोगिता में विज्ञापन बहुत अधिक महत्त्व होता है और इसने प्रतियोगी विज्ञापन किए जाते हैं।
एकाधिकार में दीर्घकाल में फर्म का असामान्य लाभ प्राप्त होता है।	इसमें उद्योग की सभी फर्में दीर्घकाल में केवल सामान्य लाभ भी प्राप्त कर सकती है।
एक अधिकारी ने उत्पादक अपने लाभों को अधिकतम करने के लिए कीमत विभेद नीति को अपना सकता है।	इसमें फर्म एक ही वस्तु की अलग अलग क्रेताओं से भिन्न भिन्न कीमत नहीं ले सकती।

पूर्ण प्रतियोगिता में संतुलन कीमत निर्धारण

संतुलन कीमत क्या है?

संतुलन शब्द का अभिप्राय है किसी बदलाव की प्रवृति का अनुपस्थित होना।

संतुलन कीमत ऐसी स्थिति को दर्शाती है। जहाँ कीमत को निर्धारित करने वाले शक्तियां में किसी बदलाव की कोई प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है।

इस प्रकार,

संतुलन कीमत वह कीमत है जो मांग एवं पूर्ति की शक्तियां द्वारा उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति आपस में बराबर होती है।

संतुलन कीमत = बाजार मांग = बाजार पूर्ति

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

संतुलन कीमत पर मांग और पूर्ति घटक आपस में बराबर होने का अभिप्राय है कि यह संतुलन कीमत क्रेता एवं विक्रेता दोनों को स्वीकार्य होती है अर्थात संतुलन कीमत पर विक्रेता वस्तु की जितनी मात्रा बेचना चाहता है, क्रेता उसी संतुलन कीमत पर वस्तु की उतनी ही मात्रा खरीदना चाहता है।

क्रेता का मांग = विक्रेता की पूर्ति

पूर्ण प्रतियोगिता में संतुलन कीमत निर्धारण

प्रो. मार्शल के अनुसार किसी वस्तु की कीमत उस वस्तु की उत्पादन लागत ***(पूर्ति पक्ष)*** तथा उस वस्तु की उपयोगिता ***(मांग पक्ष)*** दोनों द्वारा निर्धारित होती है।

रिकार्डो

संतुलन कीमत का निर्धारण केवल मांग पक्ष के द्वारा

जेवंस

संतुलन कीमत का निर्धारण केवल पूर्ति पक्ष के द्वारा

इस प्रकार **मार्शल** ने इस बात पर बल दिया कि **मांग और पूर्ति** दोनों शक्तियां ***कीमत निर्धारण*** में क्रियाशील होती है तथा *वस्तु की कीमत उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तुओं की मांग तथा वस्तुओं की पूर्ति परस्पर बराबर हो जाते हैं।*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रो. मार्शल ने बताया कि जिस प्रकार कैंची के दो फलक कागज काटने के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार वस्तु की कीमत निर्धारण के लिए मांग पक्ष एवं पूर्ति पक्ष दोनों का होना आवश्यक है।

उदाहरण

प्रति इकाई कीमत	वस्तु की पूर्ति	वस्तुओं की मांग
10	100	20
8	80	40
6	**60**	**60**
4	40	80
2	20	100

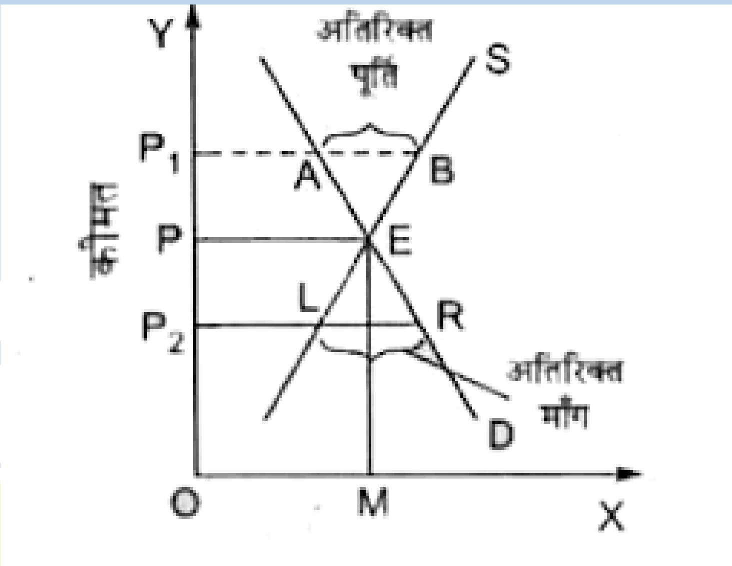

संतुलन कीमत में परिवर्तन

(Change in Equilibrium Price)

THE ECONOMICS GURU

संतुलित कीमत में तीन दशाओं में परिवर्तन संभव है:

1. केवल मांग में परिवर्तन
2. केवल पूर्ति में परिवर्तन
3. मांग और पूर्ति दोनों में परिवर्तन

केवल मांग में परिवर्तन जबकि पूर्ति स्थिर रहती है

जब पूर्ति वक्र में कोई परिवर्तन न आए, पर मांग में परिवर्तन आ जाए तो उसका प्रभाव संतुलन, कीमत और संतुलन मात्रा दोनों पर पड़ता है। मांग में परिवर्तन कई कारणों से हो सकता है जैसे:

- उपभोक्ता की आय में परिवर्तन।
- संबंधित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन।
- स्थानापन्नो की उपलब्धि।
- जनसंख्या में वृद्धि।
- फैशन आदि में वृद्धि।

मांग में परिवर्तन की निम्नलिखित दो स्थितियां हो सकती है:

मांग में वृद्धि

जब पूर्ति स्थिर रहती है और केवल मांग में वृद्धि हो जाती है तो ऐसी स्थिति में संतुलन कीमत और संतुलन मात्रा दोनों में वृद्धि होती है।

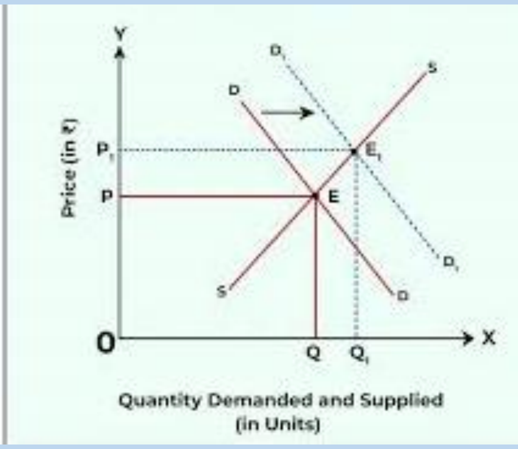

THE ECONOM
EDUCATION | INSPIRATIO

मांग में कमी

पूर्ति के स्थिर रहने की दशा में यदि केवल मांग में कमी होती है तो ऐसी दशा में संतुलन, कीमत और संतुलन मात्रा दोनों में कमी होती है।

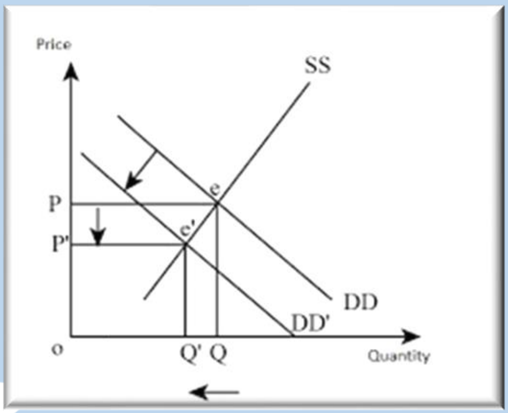

पूर्ति में परिवर्तन जबकि मांग स्थिर रहे

यदि वस्तुओं की मांग में कोई परिवर्तन न हो। उस दशा में पूर्ति में होने वाले परिवर्तन से संतुलन, कीमत और संतुलन मात्रा दोनों पर प्रभाव पड़ता है।

पूर्ति में परिवर्तन कई कारणों से हो सकता है जैसे:

- कच्चे माल की कीमत में परिवर्तन।
- श्रम मूल्य में परिवर्तन
- मशीनरी, औजार, आदि के मूल्य में परिवर्तन।
- उत्पत्ति के पैमाने का विस्तार अथवा संकुचन।
- उत्पादन तकनीक में परिवर्तन आदि।

पूर्ति में परिवर्तन दो प्रकार से हो सकते हैं:

पूर्ति में वृद्धि

यदि वस्तु की मांग स्थिर रहे और केवल वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर पूर्ति विभाग दाईं ओर खिसक जाता है, जिससे संतुलन मूल्य गिर जाता है, लेकिन संतुलन मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

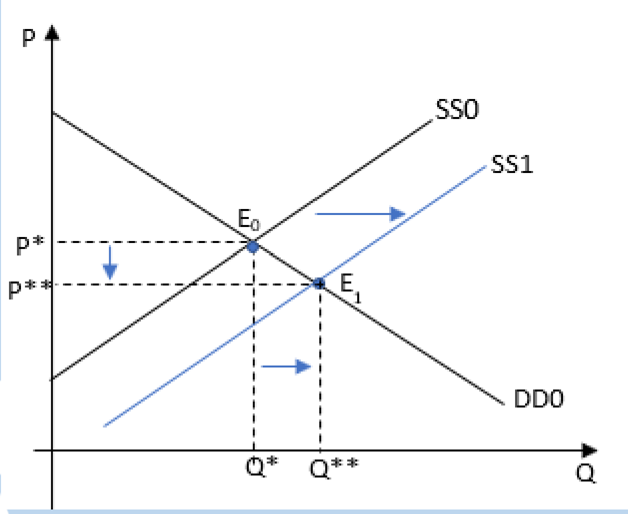

पूर्ति में कमी

यदि वस्तु की मांग यथावत बनी रहे तो पूर्ति में कमी होने से संतुलन कीमत बढ़ जाएंगी और संतुलन मात्रा में कमी आ जाएगी।

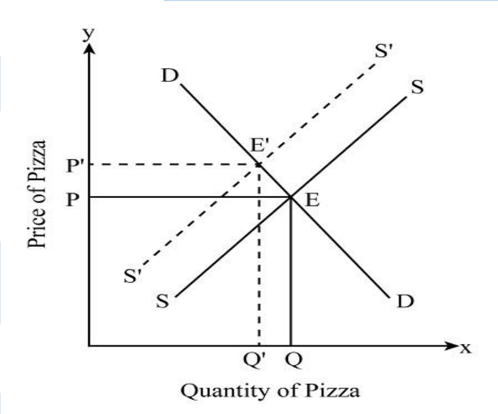

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

मांग एवं पूर्ति के एक साथ परिवर्तन

1. मांग एवं पूर्ति में एक साथ वृद्धि
2. मांग एवं पूर्ति में एक साथ कमी

मांग एवं पूर्ति में एक साथ वृद्धि

यदि मांग में वृद्धि अधिक और पूर्ति में वृद्धि कम हो तो संतुलन कीमत बढ़ जाएगा।

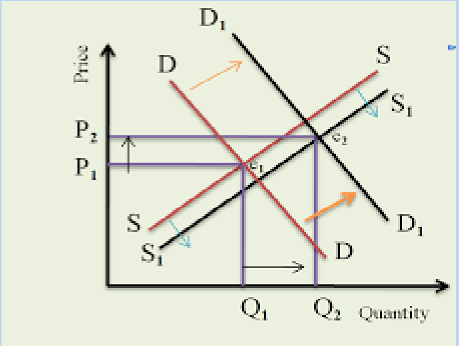

यदि मांग और पूर्ति दोनों में वृद्धि समान हो तो संतुलन मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

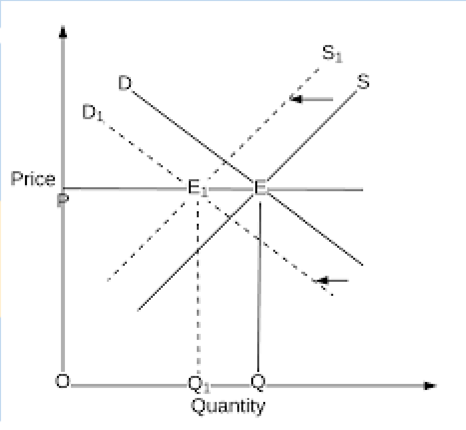

यदि मांग में वृद्धि कम और पूर्ति में वृद्धि अधिक हो तो संतुलन कीमत पहले से कम हो जाएगा।

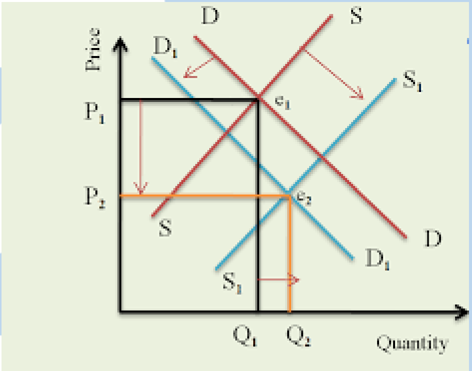

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यादा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद
नकुल ढाली
The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*
Instagram- *@dhali_sir*

www.theeconomicsgruru.com